नव भारत
राष्ट्रहित सर्वोपरि 1934 से

अल कायदा ने कराए थे हमले

1 एनएससी के खुलासे के बाद सुरक्षा एजेंसियां सतर्क

2 2025 में लाल किले पर धमाके में मरे थे 11 लोग

नई दिल्ली, 13 अगस्त. स्वतंत्रता दिवस के 2 दिन पहले संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् (एनएससी) ने एक बड़ा खुलासा कर भारत को चौका दिया है. रिपोर्ट में कहा गया है कि दिल्ली लाल किला के पास नवंबर 2025 में हुए धमाके के लिए अल कायदा इन इंडियन सब कांटिनेंट (एक्यूआईएस) को जिम्मेदार है. इस धमाके में 11 की मौत हुई थी और 20 से ज्यादा घायल हुए थे.

एक्यूआईएस ने दक्षिण और मध्य एशिया में अपनी गतिविधियों को नए तरीके से संगठित किया है. संगठन के बारे में आकलन है कि वह पहले के अपेक्षाकृत बिखरे ढांचे से आगे बढ़कर क्षेत्रीय आतंकी संगठन के रूप में अपनी क्षमता मजबूत कर रहा है. इसके लिए वित्तीय और रसद नेटवर्क तैयार किए जा रहे हैं. साथ ही बड़े आतंकी दस्तों के बजाय छोटे और अलग-अलग प्रकोष्ठों के जरिए काम करने की रणनीति पर जोर दिया जा रहा है. लाल किला धमाके का संदर्भ इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे पहले संयुक्त राष्ट्र की 37वीं रिपोर्ट में इस हमले के साथ पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के कथित संबंध का उल्लेख किया गया था. उस रिपोर्ट में एक सदस्य देश की ओर से जैश-ए-मोहम्मद को कई हमलों की जिम्मेदारी लेने और नवंबर 2025 के लाल किला हमले से कथित तौर पर जुड़े होने की जानकारी दी गई थी. नई रिपोर्ट में एक्यूआईएस की गतिविधियों पर भी चिंता जताई गई है. संयुक्त राष्ट्र के आकलन के अनुसार संगठन अफगानिस्तान के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में सक्रिय है और बाहरी इलाकों में हमले करने की क्षमता विकसित करने पर ध्यान दे रहा है. रिपोर्ट में संगठन के नेतृत्व और उसके प्रचार तंत्र की गतिविधियों का भी उल्लेख किया गया है.

> रिपोर्ट में बांग्लादेश में एक्यूआईएस के प्रकोष्ठ स्थापित करने के प्रयासों को लेकर भी चिंता जताई गई है. इससे संकेत मिलता है कि संगठन दक्षिण एशिया में अपने नेटवर्क का विस्तार करने की कोशिश कर रहा है. नवंबर 2025 में लाल किला मेट्रो स्टेशन के पास एक कार में विस्फोट हुआ था. धमाके में कई लोगों की मौत हुई थी और बड़ी संख्या में लोग घायल हुए थे. घटना के बाद सुरक्षा एजेंसियों ने जांच तेज कर दी थी और दिल्ली समेत कई क्षेत्रों में सुरक्षा बढ़ाई गई थी. संयुक्त राष्ट्र की ताजा रिपोर्ट ऐसे समय सामने आई है जब दक्षिण एशिया में आतंकी संगठनों के बदलते नेटवर्क और सीमा पार गतिविधियों को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चिंता बनी हुई है. रिपोर्ट में एक्यूआईएस के अलावा इस्लामिक स्टेट-खुरासान जैसे संगठनों की गतिविधियों का भी आकलन किया गया है.

वंदे मातरम् के साथ खत्म हुआ मानसून सत्र

नई दिल्ली, 13 अगस्त. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की मौजूदगी में संसद का मानसून सत्र गुरुवार को समाप्त हो गया. लोकसभा की कार्यवाही वंदे मातरम् के पूर्ण गायन के बाद अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई. लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सदस्यों से राष्ट्रीय गीत के सम्मान में खड़े होने का आग्रह किया और इसके बाद सदन को स्थगित करने की घोषणा की. 25 दिन के मानसून सत्र में केवल 19 बैठकें हुईं.

37	12	11	19
घंटे 49 मिनट ही काम हुआ राज्यसभा में	विधेयकों पर चर्चा हुयी और पारित किया	बिल पेश और पारित किए लोकसभा में	प्रतिशत काम हुआ सिर्फ लोकसभा में

हलांकि, सत्र के दौरान संसद ने कई महत्वपूर्ण विधायी कार्य भी पूरे किए. लोकसभा में 11 विधेयक पेश किए गए और उन्हें पारित किया गया. वहीं राज्यसभा में 12 विधेयकों पर चर्चा हुई और उन्हें मंजूरी दी गई. राज्यसभा में पूरे सत्र के दौरान केवल 37 घंटे 49 मिनट ही कार्यवाही चल सकी. वहीं लोकसभा में निर्धारित समय की तुलना... ▶ शेष पेज 12 पर

लेबनान में खत्म हुई मौत की सजा

बेरूत. लेबनान में मौत की सजा को खत्म करने का फैसला अरब दुनिया में न्याय व्यवस्था को लेकर बदलते नजरिए का संकेत माना जा रहा है. लेबनान की संसद ने एक कानून को मंजूरी दी है, जिसके तहत मौत की सजा के स्थान पर कठोर श्रम के साथ उम्रकैद की सजा दी जाएगी.

पैकेटबंद खाद्य पदार्थों पर सुको का नोटिस

नई दिल्ली, 13 अगस्त. पैकेटबंद खाद्य पदार्थों पर चेतावनी लेबल लगाने के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार और एफएसएसएआई को कड़ी फटकार लगाई है. अदालत ने कहा कि यह मामला लंबे समय से लंबित है और अब सरकार को अंतिम फैसला लेना ही होगा.

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र को दो सप्ताह का समय देते हुए कहा कि अगर इस अवधि में कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया तो अदालत खुद आदेश जारी करेगी. जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस के विनोद चंद्रन की पीठ ने गुरुवार को सुनवाई के दौरान कहा, यह आपका आखिरी मौका है. अगली बार हम फैसला सुनाएंगे. अदालत की यह टिप्पणी पैकेटबंद खाद्य पदार्थों में अधिक मात्रा में चीनी, नमक और सैचुरेटेड फैट की मौजूदगी को लेकर की गई.

कड़कडडूमा कोर्ट ने 13 आरोपी को बरी किया

नई दिल्ली, 13 अगस्त. उत्तर-पूर्वी दिल्ली में वर्ष 2020 में हुए दंगों से जुड़े एक मामले में कड़कड़डूमा कोर्ट ने गुरुवार को बड़ा फैसला सुनाया. अदालत ने इस मामले में आरोपी बनाए गए 13 लोगों को बरी कर दिया. न्यायालय ने कहा कि अभियोजन पक्ष की ओर से पेश किए गए मुख्य गवाह की गवाही भरोसेमंद नहीं पाई गई और उसके बयान संदेह के घेरे में रहे. अदालत ने अपने आदेश में कहा कि आपराधिक न्याय व्यवस्था में किसी आरोपी को दोषी ठहराने के लिए अभियोजन पक्ष को आरोपों को संदेह से परे साबित करना होता है.

डॉक्टर-इंजीनियर बनने तक सीमित न रहें

- ▶ देश के युवाओं को राजनीति में सक्रिय भागीदारी करनी होगी
- ▶ संसद यूथ पॉर्लियामेंट को संबोधित करते हुए सीएम ने कहा

प्रशासनिक संवाददाता

भोपाल, 13 अगस्त. मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि देश के युवाओं को राजनीति में आकर अपनी सक्रिय भागीदारी करनी होगी. युवा, डॉक्टर-इंजीनियर बनने के साथ ही राजनीति में आकर लोकतंत्र को सशक्त बनाएं.

देश की आजादी के लिए अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहुति दी. नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने आईसीएस की परीक्षा पास करने के बाद नौकरी ठुकराकर अंग्रेजों को करारा जवाब दिया था. वे देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए स्वाधीनता के आंदोलन में कूद पड़े. देश के युवाओं को लोकतंत्र, संसदीय परम्परा और नीति निर्माण से जोड़ने की यह पहल अनुकरणीय है. देश का युवा भारत के भविष्य के लिए मंथन करने बैठा है. यह एक सुखद.. ▶ शेष पेज 12 पर

सनातन संस्कृति में मातृसत्ता सर्वोपरि

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मप्र देश का दिल है और भारत दुनिया का सबसे युवा देश है. संसद यूथ पार्लियामेंट 2026 के आयोजन में 12 राज्य और 58 नगरों के युवाओं ने हिस्सा लिया है. सदन कल्याणकारी नीतियों का निर्माण करने वाला पवित्र स्थान है. इस युवा संसद में बेटियों की सक्रिय भागीदारी महिला सशक्तिकरण का प्रभावी उदाहरण है.

सुखबीर बादल पर नांदेड़ में जानलेवा हमला

हमले को रोकने के दौरान सुरक्षाकर्मी हुआ घायल

नांदेड़, 13 अगस्त. महाराष्ट्र के नांदेड़ में शिरोमणि अकाली दल के प्रमुख और पंजाब के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखबीर सिंह बादल पर गुरुवार को जानलेवा हमले की कोशिश ने सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए. घटना हजूर साहिब गुरुद्वारे में हुई, जहां सुखबीर बादल मौजूद थे.

हमलावर ने धारदार हथियार से उन पर वार करने की कोशिश की, लेकिन मौके पर तैनात सुरक्षाकर्मियों ने तुरंत हस्तक्षेप कर उसे काबू में कर लिया. हमले को रोकने के दौरान एक सुरक्षाकर्मी घायल हो गया. सुखबीर बादल को भी अस्पताल ले जाया गया. जानकारी के मुताबिक उनकी हालत स्थिर है. पुलिस ने हमलावर को गिरफ्तार कर लिया है.

मोदी ने सुखबीर का फोन कर हाल चाल पूछा

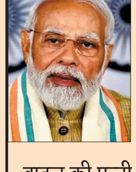

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री और शिरोमणि अकाली दल (शिअद) के प्रमुख सुखबीर सिंह बादल की पत्नी हरसिमरत कौर बादल से फोन पर बात की. पीएम मोदी ने सुखबीर सिंह बादल के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली.

आय से अधिक संपत्ति मामले में शीर्ष कोर्ट पहुंचे राहुल

नई दिल्ली. लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है. उन्होंने इलाहाबाद हाईकोर्ट के उन आदेशों को चुनौती दी है, जिनमें केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय को उनके खिलाफ लगाए गए आय से अधिक संपत्ति के आरोपों की जांच करने को कहा गया था. ये आरोप भाजपा के एक कार्यकर्ता ने लगाए हैं. आरोप है कि राहुल गांधी के पास उनकी आय के मुकाबले ज्यादा संपत्ति है.

जनविश्वास के 9 दशक ▶ नवभारत की ऐतिहासिक यात्रा

आजादी की लड़ाई से जन-गण की आवाज बनने तक

संजीव शर्मा

भोपाल, 13 अगस्त. आजादी से पहले सवाल था भारत कब आजाद होगा? आजादी के बाद सवाल बदल गया भारत को आगे कैसे ले जाया जाए? और मध्यप्रदेश के विस्तार के साथ एक और सवाल जुड़ा हर शहर, हर गांव और हर नागरिक की आवाज लोकतंत्र तक कैसे पहुंचे.

जबलपुर में न्याय की आवाज. भोपाल में शासन और राजनीति की आवाज. इंदौर में व्यापार और उद्योग की आवाज. ग्वालियर में इतिहास और बदलते समाज की आवाज. सतना में विंध्य की आवाज. और छिंदवाड़ा में आदिवासी, ग्रामीण और उभरते मध्यप्रदेश की आवाज.

इन अलग-अलग आवाजों को एक साथ रखने की कोशिश ही नवभारत की विस्तार यात्रा की सबसे बड़ी पहचान बनी. इस प्रकार 1934 में निकली एक आवाज आजादी की लड़ाई से गुजरते हुए आजाद भारत के निर्माण की साक्षी बनी.

फिर वह आवाज नागपुर की सीमाओं से बाहर निकल कर जबलपुर में पहुंची. भोपाल की राजधानी से जुड़ी. इंदौर के बाजारों तक गई. ग्वालियर के किले की छाया में पहुंची. सतना के विंध्य को आवाज दी. और छिंदवाड़ा की पहाड़ियों तक जा पहुंची.

यह केवल एक समाचार पत्र के संस्करणों की कहानी नहीं है. यह मध्यप्रदेश के बदलते भूगोल, बदलते समाज और बदलती आकांक्षाओं के साथ चलती पत्रकारिता की कहानी है. क्योंकि शहर बदलते रहे, सरकारें बदलती रहीं, तकनीक बदलती रही, समय बदलता रहा, लेकिन एक चीज... ▶ शेष पेज 12 पर